राजदेव सिंह
निदेशक

निदेशक की कलम से .....

यह हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की जल संसाधन एवं जलविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्यों के साथ-साथ सामाजिक तथा संवैधानिक अपेक्षाओं को पूरा करने में पूर्ण निष्ठा तथा मनोयोग से समर्पित है । संस्थान पिछले 16-17 वर्षों से प्रकाशित की जा रही अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका 'प्रवाहिनी' का इस वर्ष भी हिंदी दिवस के गरिमामय अवसर पर प्रकाशन कर रहा है । गृह पत्रिका का यह 17वॉ संस्करण हैं। संस्थान में राजभाषा हिंदी से जुड़ी अनेक गतिविधियों के आयोजन के साथ-साथ इस पत्रिका के प्रकाशन से सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को व्यापक बढ़ावा तो मिलेगा ही, साथ ही इससे अधिकारियों एवं कर्मचारियों में तकनीकी लेखन के प्रति और रूचि व उत्साह भी विकसित होगा । यह पत्रिका संस्थान के पदाधिकारियों की हिंदी के प्रयोग के प्रति गहन रूचि को अभिव्यक्त कर अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की ओर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है ।

भाषा राष्ट्र की पहचान होती है तथा यह उस राष्ट्र की संस्कृति, संस्कार एवं सभ्यता की संवाहिका होती है । राष्ट्र की उन्नति में भाषा और संस्कृति दोनों का ही विशेष योगदान होता है । भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचार एवं चिन्तन को एक-दूसरे तक पहुँचा सकते हैं । देश के एक बड़े भू-भाग में बोली व समझी जाने वाली भाषा हिंदी को ही भारतीय संविधान सभा ने विशेषता प्रदान करते हुए देश की राजकाज की भाषा के रूप में चुना । और इसी आधार पर 14 सितम्बर, 1949 को इसे संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया । हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं की तुलना में अद्‌वितीय संप्रेषण शक्ति है जिसे पढ़ने, लिखने व समझने में कोई कठिनाई नहीं है । हिंदी भाषा की सम्पर्क भाषा के रूप में एक अहम भूमिका है । हमारे देश में वर्षों से यह भाषा हर क्षेत्र में सम्पर्क भाषा के रूप में अपना दायित्व निभा रही है ।

जहॉ तक राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन का प्रश्न है इस संबंध में मुझे यह कहने में बेहद खुशी हो रही है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी संस्था होने के वाबजूद भी राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की अपने अनवरत प्रयासों के माध्यम से न केवल प्रशासनिक तथा

गैर-तकनीकी अपितु वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग पूरी निष्ठा तथा समर्पित-भाव से कर रहा है । यही नहीं यह राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को पूरा करने की ओर भी प्रगतिशील है । इस पत्रिका के माध्यम से मैं संस्थान के सभी पदाधिकारियों से अनुरोध करना चाहूंगा कि वे अपने सरकारी कामकाज, चाहे वह प्रशासनिक प्रकृति का हो अथवा तकनीकी, में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें, सरल और प्रचलित भाषा का प्रयोग करें, जटिल व बोझिल शब्दों के प्रयोग से बचें और हिंदी के प्रयोग में किसी प्रकार का संकोच न करें बल्कि इसे अपना गौरव समझें ।

हर वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखते हुए 'प्रवाहिनी' के इस अंक में छपे लेखों की भाषा सरल व सहज रखी गई है । आशा है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों को रोचक, उपयोगी व ज्ञानवर्धक लगेगा । पत्रिका के सम्पादन, टंकण, प्रूफ रीडिंग व प्रकाशन संबंधी कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारियों तथा समस्त विद्वत रचनाकारों को मै हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और इस पत्रिका की श्रेष्ठ सफलता की कामना करता हूँ ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)